समय की प्रतीक्षा से, सादगी की सरलता

आजा मेरे प्यारे सपने
सुनो मुझे कुछ कहना हैं।
पाना जितना चाहने लगे
उतना ही तुम दूर खड़े।

सूरज जितना बनना है तो
सूरज जितना जलना होगा।
सपने सागर पाना है तो
प्रतीक्षा से समय बिताना होगा।

सपने को प्यार से बुकारे
सोचते-मिरते समय बिताऐं।
सादगी की सरलता पाकर
समय पर, उज्वल सच को समझौता से, अपने ओर बढ़ाकर।

वे सब मिलकर यह बोले
आजा मेरे प्यारे सपने।
मिलकर हम इस धरती को
बना देंगे एक सच्चा रूह।

हीरे जितना तपता हैं
उतना खूब चमकता हैं।
हम जितने परिश्रम करें
उतने मधुर फल प्राप्त करें।

खनकता धूट हँसी दिलायें
कड़वी सच ही रूह बनायें।
आजा मेरे प्यारे सपने
~~स्वनों के रचयिता को~~
सपनो के रचयिता को खुशी दिलायें।

ऊचाई पर उड़ना हैं तो
पर्वत से अब नीचे उतरो।
मानव जैसा बनना हैं तो
सादगी उठाकर सरलता पाओं।

समय की प्रतीक्षा से आगें बढ़कर
रूह को अपने याद दिलाओं,
अपने सपने, नफरत ~~कि~~ की
समझोता से, खीचने केलियें दूसरों
न सिर्फ छुपे होगें।

लोहा जैसे मार खायें
वे उनने सुंदरता अपने ओर पाये।
अपने ओर आते हुर तूफानों को
प्रेरणा मानकर समझौता की उज्वल तन्हा से वे हाथ लगायें।
आजा मेरे प्यारे लम्हे
आजा मेरे प्यारे सपने।
आजा इस समय की दूदेसार में
मिलकर बैठें मेरी न सिर्फ हम सबके
सरलता में॥